License Information

Study Notes - Book Intros (Tyndale) (Hindi) is based on: Tyndale Open Study Notes, Tyndale House Publishers, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

लैव्यव्यवस्था

Study Notes - Book Intros (Tyndale)

लैव्यव्यवस्था

लैव्यव्यवस्था ने प्राचीन इस्राएल को एक पवित्र परमेश्वर के साथ सम्बन्ध में जीवन व्यतीत करने में सक्षम बनाया। परन्तु अब जब मसीह हमारे महायाजक और अन्तिम बलिदान के रूप में आ चुके हैं — जिससे लैव्यव्यवस्था में उल्लिखित कई आवश्यकताओं को पूरा किया जा रहा है — तो प्राचीन इस्राएल की आराधना प्रणाली के नियम, जिसमें उसके याजक और पशु बलिदान शामिल हैं, का हमारे साथ क्या सम्बन्ध है? लैव्यव्यवस्था परमेश्वर की पवित्रता की हमारी समझ को बढ़ाती है। और जो लोग उसे जानते हैं उनके लिए परमेश्वर की माँग वही रहती है: "क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ. . . .इसलिए तुम पवित्र बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ" (लैव्य 11:44–45; 1 पत 1:15–16)।

लैव्यव्यवस्था

पृष्टभूमि

लैव्यव्यवस्था छुटकारे के विवरण को जारी रखती है जो अब्राहम से की गई प्रतिज्ञाओं (उत 12, 15, 17) और मिस्र में दासत्व से इस्राएलियों की मुक्ति (निर्ग 1–15) के साथ शुरू हुआ था। लैव्यव्यवस्था की पृष्ठभूमि सीनै पर्वत के निकट स्थित है। उस समय तक इस्राएली न तो जंगल में भटके थे और न ही कनान के प्रतिज्ञात देश में प्रवेश किए थे। परमेश्वर ने पहले ही इस्राएल के साथ अपनी वाचा स्थापित कर दी थी, इस्राएलियों को अपना निज धन, याजकों का राज्य, और चुनी हुई प्रजा घोषित किया था (निर्ग 19:5–6)। इस्राएल की प्रजा ने दस आज्ञाएँ प्राप्त की थीं (निर्ग 20:1–17), तम्बू के लिए योजनाएँ (निर्ग 25–27; 30:1–38), और याजक का पद की स्थापना (निर्ग 28–29)। तम्बू पूरा हो चुका था और समर्पित किया गया था (निर्ग 35–40)। अब, लैव्यव्यवस्था में, परमेश्वर ने मूसा से अपने पवित्र स्वभाव के बारे में बात की और इस्राएल के लिए उपयुक्त उपासना और चाल-चलन के निर्देश प्रदान किए क्योंकि वे उनकी वाचा की प्रजा थे।

लैव्यव्यवस्था

सारांश

लैव्यव्यवस्था में नियम मुख्य रूप से लेवी के याजकीय गोत्र की गतिविधियों और जिम्मेदारियों से सम्बन्धित हैं, विशेष रूप से महायाजक के (देखें निर्ग 28; गिन 3:44–4:49)। इसमें तम्बू , याजक का पद, बलिदान, पवित्र दिन, और धार्मिक शुद्धता के बारे में परमेश्वर के निर्देश शामिल हैं। लैव्यव्यवस्था में में तीन मुख्य विषय हैं: परमेश्वर की पवित्रता, पवित्र परमेश्वर की उपासना में उपयुक्त विधियाँ, और इस्राएल को परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध में कैसे पवित्र रहना चाहिए।

परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध की शुरुआत उन्हें जानने और उनके स्वाभाव को समझने से होती है। फिर भी, सीमित मनुष्य बुद्धि अनन्त परमेश्वर को पूरी तरह से समझ नहीं सकती। इससे भी बुरी बात यह है कि यदि हम अपने स्वयं के विचारों पर निर्भर रहें, तो हम अनिवार्य रूप से सच्चे परमेश्वर के स्थान पर मूर्तियों की उपासना करने लगते हैं। लैव्यव्यवस्था में, परमेश्वर ने अपनी पवित्रता को स्पष्ट रूप से प्रकट किया और अपनी प्रजा को सिखाया कि वे उनकी किस प्रकार स्वीकार्य रूप से आराधना करें। प्रत्येक बलिदान और पवित्र दिन इस्राएलियों को परमेश्वर के बारे में और वह उनसे क्या अपेक्षा करते हैं, यह सिखाता है।

परमेश्वर इस्राएल को उन्हें जानने और प्रेम करने के लिए बुलाते हैं (देखें व्य.वि. 6:5; 11:1)। परिणामस्वरूप, वे एक-दूसरे से भी प्रेम करेंगे और सेवा करेंगे (19:18, 33–34)। लैव्यव्यवस्था में प्रकट की गई रीति और नियम इस्राएलियों को सिखाते हैं कि कैसे प्रेम और सेवा को अपने जीवन में, व्यक्तिगत रूप से और एक राष्ट्र के रूप में, शामिल करें।

लैव्यव्यवस्था

लेखक

कुछ विद्वान ऐसा मानते हैं कि लैव्यव्यवस्था इस्राएल की बँधुआई के दौरान बेबीलोन में लिखा गया था (लगभग 586–539 ई. पू.), जो मूसा के समय के काफी बाद की बात है। हालांकि, यह दृष्टिकोण यह नहीं बताता कि बँधुआई के दौरान यहूदी धर्म, जो तेजी से रब्बी और आराधनालय के चारों ओर केन्द्रित हो रहा था, याजक के पद और तम्बू को लेकर चिंतित क्यों होता। इसके अलावा, यह बँधुआई से पहले इस्राएल की उपासना की परम्पराओं को भी स्पष्ट नहीं करता, सिवाय उन प्रथाओं के जो भजन संहिता में उल्लिखित या संकेतित हैं।

यह सम्भावना है कि मूसा ने इस्राएल के जंगल में निवास के दौरान निर्गमन के बाद लैव्यव्यवस्था लिखी थी। यहूदी परम्परा और प्रारम्भिक मसीही कलीसिया दोनों मूसा को लैव्यव्यवस्था का लेखक मानते है। मिस्र के राजा के दरबार में पले-बढ़े मूसा पढ़ने, लिखने और गणित में निपुण थे (देखें प्रेरि 7:20–22), और वे लैव्यव्यवस्था लिखने में सक्षम थे। यह पुस्तक इस्राएल को परमेश्वर द्वारा मूसा के माध्यम से दिए गए लैव्यव्यवस्था की सामग्री की पुष्टि करने वाले बयानों के साथ शुरू और समाप्त होती है (1:1–2; 27:34)। लैव्यव्यवस्था बार-बार वर्णन करती है कि मूसा ने यहोवा से निर्देश कैसे प्राप्त किए (उदाहरण के लिए, 4:1; 5:14; 6:1, 8, 19, 24; 7:22, 28; 8:1) और उन्हें कैसे पूरा किया (8:4–10:20)। पुराना नियम अक्सर मूसा को पंचग्रन्थ (उत्पत्ति—व्यवस्थाविवरण; देखें यहो 8:31–32; 23:6; 1 रा 2:3; 2 रा 14:6; 23:25; 2 इति 23:18; 30:16; एज्रा 3:2; 7:6; नहे 8:1; दानि 9:11–13) का लेखक बताता है। नया नियम भी इसी बात की पुष्टि करता है (मत्ती 19:7–8; लूका 2:22; 24:44; यूह 7:19, 23; रोम 10:5; 1 कुरि 9:9; इब्रा 10:28)। देखें उत्पत्ति की पुस्तक का परिचय, “लेखक।”

लैव्यव्यवस्था

अर्थ और संदेश

हालांकि यह एक प्राचीन समय और संस्कृति में स्थापित है, लैव्यव्यवस्था की पुस्तक एक अनन्त और जीवंत संदेश देती है: परमेश्वर पवित्र हैं, और वह अपने उद्धार पाए हुए लोगों से अपेक्षा करते हैं कि वे भी उनकी तरह पवित्र हों। परमेश्वर की पवित्रता और उनका अनुग्रहपूर्ण उद्धार ही उनके लोगों की पवित्रता का आधार और प्रेरणा स्रोत हैं (11:44–45)।

याजक परमेश्वर और लोगों के बीच वाचा के मध्यस्थ के रूप में खड़े होते थे। याजक यह व्याख्या करते थे कि क्या पवित्र है और समाज में पवित्रता कैसे व्यक्त की जानी चाहिए। प्रायश्चित बलिदान लोगों के पापों की क्षमा और परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध स्थापित करने का मार्ग प्रदान करते थे (प्रायश्चित)। गैर-प्रायश्चित बलिदानों के द्वारा लोग परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध का उत्सव उपहारों और सामूहिक भोज के माध्यम से मनाते थे। जहाँ आस-पास की जातियां अपने देवताओं को प्रसन्न करने और उनका अनुग्रह प्राप्त करने के लिए बलिदान चढ़ाती थीं, वहीं इस्राएल की आराधना परमेश्वर को प्रभावित करने के लिए नहीं थी। बल्कि, आराधना लोगों को तैयार और शुद्ध करती थी ताकि वे परमेश्वर के निकट आ सकें। प्रत्येक नियम, विधि और पवित्र दिन यह सिखाता है कि परमेश्वर पवित्र है, और वह अपने लोगों से भी पवित्र होने की अपेक्षा करते हैं (लैव्य 11:44–45; 19:2; देखें 1 कुरि 3:17; 1 पत 1:15)।

पाप की क्षमा और परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप सीधे इस बात से सम्बन्धित हैं कि लोग एक-दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। सामाजिक न्याय की चिंता लैव्यव्यवस्था में व्याप्त है, जो अपने पड़ोसी, दरिद्र और विदेशियों के प्रति दायित्वों को प्रस्तुत करती है। परमेश्वर अपेक्षा करते है कि जो लोग उनके साथ वाचा में हैं, वे एक-दूसरे से प्रेम करें, जो उनकी प्रेमभावना की अभिव्यक्ति है (तुलना करें मत्ती 22:39; मर 12:31; लूका 10:27; रोम 13:9; गला 5:14; याकू 2:8)।